ईसाई विद्वान बाइबिल में मतभेदों को पहचानते हैं (7 का भाग 1): परिचय

रेटिंग: TOP20

विवरण:

श्रेणी: लेख तुलनात्मक धर्म बाइबल

द्वारा: Misha’al ibn Abdullah (taken from the Book: What did Jesus really Say?)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

"तो विनाश है उनके लिए जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि ये ईश्वर की ओर से है, ताकि उसके द्वारा तनिक मूल्य खरीदें! तो विनाश है उनके अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उनकी कमाई के कारण।” (क़ुरआन 2:79)

"तथा जब उनके पास ईश्वर की ओर से एक दूत, उस पुस्तक का समर्थन करते हुए, जो उनके पास है, आ गया, तो उनके एक समुदाय ने जिन्हें पुस्तक दी गयी, ईश्वर की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया, जैसे वे कुछ जानते ही न हों।" (क़ुरआन 2:101)

"जिस वचन की मैं (ईश्वर) तुझे आज्ञा देता हूं, उस में ना तो कुछ बढ़ाना, और ना उस में से कुछ घटाना, कि अपने ईश्वर यहोवा की जो आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूं उनका पालन करना।" (व्यवस्थाविवरण 4:2)

आइए आरंभ से शुरू करते हैं। इस पृथ्वी पर कोई भी बाइबिल विद्वान यह दावा नहीं करेगा कि बाइबिल स्वयं यीशु ने लिखी थी। वे सभी इस बात से सहमत हैं कि बाइबिल यीशु के जाने के बाद उनके अनुयायियों द्वारा शांति के लिए लिखी गई थी। मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट (एक प्रतिष्ठित ईसाई इंजील मिशन), शिकागो के डॉ. डब्ल्यू ग्राहम स्क्रोगी कहते हैं:

> "..हां, बाइबिल मानव लिखित है, हालांकि कुछ जोशीले लोग जो ज्ञान के अनुसार नहीं है, उन्होंने इसका खंडन किया है। वे पुस्तकें मनुष्यों के मस्तिष्क से होकर गुज़री हैं, मनुष्यों की भाषा में

लिखी गई हैं, मनुष्यों के हाथों से लिखी गई हैं और उनकी शैली में मनुष्यों के गुण हैं....यह मानव लिखित है, फिर भी दिव्य है।"[1]

एक अन्य ईसाई विद्वान, जेरूसलम के एंग्लिकन बिशप केनेथ क्रैग कहते हैं:

"... नया नियम ऐसा नहीं है... संक्षेपण और संपादन है; विकल्प पुनरुत्पादन और गवाह है। चर्च के लेखकों के दिमाग के माध्यम से इंजील आई है। वे अनुभव और इतिहास को दिखाते हैं..."[2]

"यह सर्वविदित है कि आदिम ईसाई इंजील शुरू में मुंह के शब्दों द्वारा प्रसारित किया गया था और इस मौखिक परंपरा के परिणामस्वरूप शब्द और कर्म की भिन्न लेखन हुआ है। यह भी उतना ही सच है कि जब ईसाई अभिलेख लिखने के लिए प्रतिबद्ध थे तो यह मौखिक भिन्नता का विषय बना रहा, लेखकों और संपादकों के हाथों अनैच्छिक और जानबूझकर।"[3]

"फिर भी, तथ्य की बात करें तो, सेंट पॉल के चार महान पत्रों के अपवाद के साथ नए नियम की प्रत्येक पुस्तक वर्तमान में कमोबेश विवाद का विषय है, और इनमें भी प्रक्षेप का जोर दिया गया है।"[4]

ट्रिनिटी के सबसे कट्टर रूढ़िवादी ईसाई रक्षकों में से एक, डॉ. लोबेगॉट फ्रेडरिक कॉन्स्टेंटिन वॉन टिशेंडॉर्फ, स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि:

"[नए नियम के] कई अंशों में अर्थ के इस तरह के गंभीर संशोधन हुए हैं कि हमें दर्दनाक अनिश्चितता में छोड़ दिया गया है कि वास्तव में अनुयायिओं ने क्या लिखा था"[5]

बाइबिल में मतभेदों वाले बयानों के कई उदाहरणों को सूचीबद्ध करने के बाद, डॉ. फ्रेडरिक केनियन कहते हैं:

"इस तरह की बड़ी विसंगतियों के अलावा, शायद ही कोई छंद है जिसमें कुछ प्रतियों में [प्राचीन हस्तलिपियों से बाइबिल एकत्र की गई है] वाक्यांशों में कुछ भिन्नता नहीं है। कोई यह नहीं कह सकता कि ये जोड़ या चूक या परिवर्तन केवल उदासीनता की वजह से हैं।[6]

इस पूरी किताब में आपको ईसाईजगत के कुछ प्रमुख विद्वानों के ऐसे ही अनगिनत उद्धरण मिलेंगे। आइए फिलहाल के लिए इनमे से कुछ देखें।

ईसाई सामान्य तौर पर अच्छे और सभ्य लोग होते हैं, और उनके विश्वास जितने मजबूत होते हैं, वे उतने ही सभ्य होते हैं। यह महान क़ुरआन में प्रमाणित है:

"... जो ईमान लाये हैं, सबसे कड़ा शत्रु यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे और जो ईमान लाये हैं, उनके सबसे अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। ये बात इसलिए है कि उनमें उपासक तथा सन्यासी हैं और वे अभिमान नहीं करते। तथा जब वे (ईसाई) उस (क़ुरआन) को सुनते हैं, जो रसूल पर उतरा है, तो आप देखते हैं कि उनकी आँखें आँसू से उबल रही हैं, उस सत्य के कारण, जिसे उन्होंने पहचान लिया है। वे कहते हैं, हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये, अतः हमें (सत्य) के साथियों में लिख ले।" (क़ुरआन 5:82-83)

1881 के संशोधित संस्करण से पहले बाइबिल के सभी बाइबिल "संस्करण" "प्राचीन प्रतियों" (यीशु के पांच से छह सौ साल के बीच का समय) पर निर्भर थे। संशोधित मानक संस्करण (आरएसवी) 1952 के संशोधनकर्ता पहले बाइबिल विद्वान थे जिनकी "सबसे प्राचीन प्रतियों" तक पहुंच थी, जो कि मसीह के तीन से चार सौ साल बाद पूरी तरह से दिनांकित हैं। हमारे लिए यह सहमत होना ही तर्कसंगत है कि कोई दस्तावेज़ स्रोत के जितना करीब होता है, वह उतना ही अधिक प्रामाणिक होता है। आइए देखें कि बाइबल के सबसे संशोधित संस्करण (1952 में, और फिर 1971 में संशोधित) के संबंध में ईसाईजगत की क्या राय है:

> "सर्वोत्तम संस्करण जो वर्तमान शताब्दी में निर्मित किया गया है" - (चर्च ऑफ इंग्लैंड अखबार)
>
> "सर्वोच्च प्रख्यात विद्वानों द्वारा एक पूरी तरह से ताज़ा अनुवाद" - (टाइम्स साहित्यिक पूरक)
>
> "अनुवाद की एक नई सटीकता के साथ संयुक्त अधिकृत संस्करण की अच्छी तरह से पसंद की जाने वाली विशेषताएं" - (जीवन और कार्य)
>
> "मूल का सबसे सटीक और करीबी प्रतिपादन" - (द टाइम्स)

प्रकाशक स्वयं (कोलिन्स) अपने टिप्पणियों के पृष्ठ 10 पर उल्लेख करता है:

> "यह बाइबिल (आरएसवी) पचास सहयोगी संप्रदायों का प्रतिनिधित्व करने वाली एक सलाहकार समिति द्वारा सहायता प्रदान करने वाले बत्तीस विद्वानों का उत्पाद है"

आइए देखें कि पचास सहयोगी ईसाई संप्रदायों द्वारा समर्थित सर्वोच्च प्रतिष्ठा के इन बत्तीस ईसाई विद्वानों का अधिकृत संस्करण (एवी), या जैसा कि बेहतर ज्ञात है, किंग जेम्स वर्जन (केजेवी) के बारे में क्या कहना है। आरएसवी 1971 की प्रस्तावना में हम निम्नलिखित पाते हैं:

"... फिर भी किंग जेम्स संस्करण में गंभीर दोष हैं .."

वे हमें सावधान करते हैं कि:

"...कि ये दोष इतने अधिक और इतने गंभीर हैं कि संशोधन की आवश्यकता है"

यहोवा के साक्षियों ने अपनी "अवेक" पत्रिका दिनांक 8 सितंबर 1957 में निम्नलिखित शीर्षक प्रकाशित किया: "50,000 एरर्स इन द बाइबल" जिसमें वे कहते हैं "..बाइबल में शायद 50,000 त्रुटियां हैं ... त्रुटियां जो बाइबिल में आ गई हैं ...50,000 ऐसी गंभीर गलतियाँ..." इस सब के बाद, वे आगे कहते हैं: "... समग्र रूप से बाइबल सही है।" आइए इनमें से कुछ त्रुटियों पर एक नजर डालते हैं।

फुटनोट:

[1]	डब्ल्यू ग्राहम स्क्रोगी, पृष्ठ 17
[2]	द कॉल ऑफ़ द मिनिरेट, केनेथ क्रैग, पृष्ठ 277
[3]	बाइबिल पर पीक की टिप्पणी, पृष्ठ 633
[4]	एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, 12वां संस्करण। भाग 3 , पृष्ठ 643
[5]	सीक्रेट ऑफ द माउंट सिनाई, जेम्स बेंटले, पृष्ठ 117
[6]	ऑउर बाइबिल एंड द एन्सिएंट मनुस्क्रिप्टस, डॉ. फ्रेडरिक केनियन, आइरे और स्पॉटिसवूड, पृष्ठ 3

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/584

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।